॥ श्री ॥

मुखपृष्ठ

उपक्रम का आरम्भ इ.स. १९७९ । सम्पादक : स्व.द्वारकानाथ वासुदेव केळकर

श्रीसमर्थ सेवा मण्डल, सज्जनगड (महाराष्ट्र) संचालित

श्रीमद् ग्रन्थराज दासबोध अध्ययन (श्री.दा.अ)

(पत्रद्वारा / ईमेलद्वारा)

प्रवेश - परिचय - प्रबोध प्रश्नपत्रिका संच

'श्री.दा.अ', श्रीसमर्थ सोसाईटी, धन्वन्तरि सभागार के पीछे, पटवर्धन बाग,
एरण्डवणा, पुणे - ४११००४. मोबाइल : + ९१ ८६६९४ ०५९७१
E-mail : dasbodh.abhyas@gmail.com : Web : www.dasbodhabhyas.org

पत्रद्वारा / ईमेलद्वारा अभ्यासक्रम विषयक जानकारी : भारत के किसी भी क्षेत्र अथवा विदेशों में रहने वाला, २१ वर्ष से अधिक आयु का कोई भी नागरिक इस उपक्रम में प्रवेश ले सकता है। नए अभ्यासार्थी प्रतिवर्ष १ जनवरी से १ मार्च तक प्रवेश पा सकते हैं। इस सूचना-पत्रिका में समाहित प्रश्नपत्रिकाओं में से प्रवेश पाठ्यक्रम की प्रथम प्रश्नपत्रिका को हल कर लिखा गया अपना स्वाध्याय आपको अपने क्षेत्र के लिये निर्धारित केन्द्रप्रमुख के पास भेजना होगा। केन्द्रप्रमुखों के नाम और पते आगे दिये गए हैं।

स्वाध्याय कहां भेजें : आप जिस क्षेत्र में निवास करते हैं, उस क्षेत्र के लिये निर्धारित केन्द्र में ही आप को अपना प्रथम स्वाध्याय भेजना होगा। उत्तरप्राप्ति के लिये स्वाध्याय के साथ,स्वयं का पता लिखा हुआ डाक का लिफाफा भी भेजें। अधोलिखित केन्द्रों में से समुचित केन्द्र का पता लिख कर अपना स्वाध्याय भेजें। साथ ही हल की गई प्रश्नपत्रिका तथा संकल्प-पत्र का फार्म भर कर भेजें। लिफाफे पर बाएं कोने में प्रेषक अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें।

पत्रद्वारा 'श्री दासबोध अध्ययन' के कार्यालय एवं जिला और केन्द्र संचालकों के पते

श्रीसमर्थ सोसाईटी, धन्वन्तरि सभागार के पीछे, पटवर्धन बाग, एरण्डवणा, पुणे - ४११००४

मोबाईल : ८६६९४०५९७१

१.जिला पुणे,अहमदनगर, भारत के अन्य राज्य, विदेश	श्री. सुहास क्षीरसागर, केन्द्र संचालक, 'श्री.दा.अ' , श्रीसमर्थ सोसाईटी, धन्वन्तरि सभागार के पीछे,पटवर्धन बाग, एरण्डवणा, पुणे ४११००४
२. जिला सम्पूर्ण मुम्बई महानगर, नई मुम्बई	श्री. सन्तोष नारायण सप्रे,केन्द्र संचालक, 'श्री.दा.अ.' ए-४०१,नवगुरुकृपा,केसरबाग,मुलुण्ड (पूर्व) मुम्बई-४०००८१. मोबाईल - ९९७५१३२२३४
३.जिला रायगड़, ठाणे, पालघर	श्रीमती नीलम जोशी, केन्द्र संचालक,'श्री.दा.अ.' २०१, आदित्यवैभव, श्रीगजाननमहाराज मंदिर के सामने, कुलगांव, बदलापुर (पूर्व), जिला ठाणे - ४२१५०३, दूरभाष : ०२५१-२६९१२२४, मोबाईल : ०९८५०८२९९३४
४. जिला सातारा, सोलापुर	श्री.अनन्त विश्वनाथ बोधे,केन्द्र संचालक, 'श्री.दा.अ.' ए- १०, अण्णा नांगरे नगर,कृष्णा कॅनॉल, विद्यानगर, कराड, जिला : सातारा - ४१५१२४, मोबाईल : ०९६०४४३३५२३
५. जिला जळगांव, धुळे, नासिक, नंदुरबार	डॉ. सुरेश रामदास पाठक,केन्द्र संचालक, 'श्री.दा.अ.' 'स्वामीकृपा', ५६, प्रधानपार्क, दूसरी मंज़िल,म. गांधी रोड, नासिक : ४२२००१, दूरभाष : ०२५३-२५८०३८३, मोबाईल : ०९८६०४१९०१७
६. जिला औरंगाबाद,बीड,जालना, परभणी,हिंगोली, नान्देड, उस्मानाबाद, लातूर	श्रीमती मानसी याडकीकर, केन्द्र संचालक, 'श्री.दा.अ.' गोकुल खडकेश्वर, पशु चिकित्सालय के सामने, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) : ४३१००१, मोबाईल : ९७३०००५०६३
७. जिला वर्धा, नागपुर,चन्द्रपुर, भंडारा,गोन्दिया, गडचिरोली	श्री.रमेश वासुदेव फडके, केन्द्र संचालक, 'श्री.दा.अ.', १ बी, दामोदर हाउसिंग लेआउट, आर्.पी.टी.एस्. रोड,सुरेन्द्र नगर, विवेकानन्द पोस्ट, नागपुर : ४४००१५ मोबाईल : ०९८५००७०४३४
८. जिला सांगली,कोल्हापुर, रत्नागिरि	श्रीमती ज्योति कोरबू, केन्द्र संचालक, 'श्री.दा.अ.' कल्याण कुटी, प्लॉट नं : १५,पद्मावती नगर,धामणी रोड, सांगली :४१६४१६ दूरभाष : ०२३३-२३०१४२४, मोबाईल : ०९४२२६१८२०३ / ०६८०१७२०३

९. जिला अकोला, बुलढाणा, अमरावती, यवतमाळ, वाशिम	श्री.प्रदीप गणोरकर, केन्द्र संचालक,'श्री.दा.अ.',मूर्तिजापुर, पटवारी कॉलोनी, भक्तिधाम मंदिर के पास, जिला : अकोला ४४४१०७, मोबाईल : ८२७५७२९१२९
१०. सम्पूर्ण गोमान्तक राज्य (गोवा)	श्री. सुरेश तळावलीकर, केन्द्र संचालक,'श्री.दा.अ.', ६१७, मातृछाया, आनन्द नगर,पोस्ट : फातोर्डा, सिन्धुदुर्ग, गोवा - ४०३६०२, मोबाईल : ७७०९७८६६८६ / ८२०८२८८६४१
११. ईमेल द्वारा	श्री. सुहास क्षीरसागर, केन्द्र संचालक,'श्री.दा.अ.', मोबाईल : ०९८८१४७६०२० dasbodh.abhyas@gmail.com

दासबोध प्रवेश (प्रथम वर्ष)

प्रश्नपत्रिका क्र. १ - (दासबोध दशक १ समास १ 'ग्रन्थारम्भलक्षण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र. २ - (दासबोध दशक १२ समास १ 'विमललक्षण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र. ३ - (दासबोध दशक १२ समास २ 'प्रत्ययनिरूपण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र. ४ - (दासबोध दशक २ समास २ 'उत्तमलक्षण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र. ५ - (दासबोध दशक ११ समास ३ 'सिकवणनिरूपण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र. ६ - (दासबोध दशक ४ समास ३ 'नामस्मरणभक्ति' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र. ७ - (दासबोध दशक १२ समास ९ 'येत्नसिकवण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र. ८ - (दासबोध दशक १२ समास १० 'उत्तमपुरुषनिरूपण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र. ९ - (दासबोध दशक १८ समास ६ 'उत्तमपुरुषलक्षण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र. १० - (दासबोध दशक १९ समास १० 'विवेकलक्षणनिरूपण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र. ११ - (दासबोध दशक १४ समास ६ 'चातुर्यलक्षण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र. १२ - (दासबोध दशक २० समास १० 'विमलब्रह्मनिरूपण' पर आधारित)

दासबोध परिचय (द्वितीय वर्ष)

प्रश्नपत्रिका क्र.१ - (दासबोध दशक १८ समास ४ 'देहदुर्लभनिरूपण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र.२ - (दासबोध दशक ३ 'स्वगुणपरीक्षा' नामक समास २(अ), ३(आ), ४(इ) तथा ५(ई) पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र.३ - (दासबोध दशक २ समास १ 'मूर्खलक्षण' एवं समास १० 'पढतमूर्खलक्षण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र.४ - (दासबोध दशक २ समास ५ 'रजोगुणलक्षण',समास ६ 'तमोगुणलक्षण' एवं समास ७ 'सत्त्वगुणलक्षण' पर आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र.५ - (दासबोध दशक २ समास ८ 'सद्विद्यानिरूपण' एवं समास ९ 'विरक्तलक्षण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.६ - (दासबोध दशक ११ समास १० 'निःस्पृहवर्तणूक' एवं दशक १५ समास २ 'निःस्पृहव्याप' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.७ - (दासबोध दशक ३ समास ६ 'आध्यात्मिक ताप', दशक ३ समास ७ 'आधिभौतिक ताप' एवं दशक ३ समास ८ 'आधिदैविक ताप' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.८ - (दासबोध दशक ४ समास ४ 'पादसेवन भक्ति',दशक ४ समास ५ 'अर्चन भक्ति' एवं दशक ४ समास ६ 'वन्दन भक्ति' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.९ - (दासबोध दशक ८ समास ६ 'दुश्चित्तनिरूपण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.१० - (दासबोध दशक ११ समास ५ 'राजकारण निरूपण' एवं दशक १९ समास ९ 'राजकारण निरूपण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र ११ - (दासबोध दशक १८ समास ७ 'जनस्वभाव निरूपण' एवं दशक १८ समास ८ 'अन्तर्देव निरूपण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.१२ - (दासबोध दशक ९ समास ४ 'जाणपणनिरूपण' पर आधारित)

दासबोध प्रबोध (तृतीय वर्ष)

प्रश्नपत्रिका क्र.१ - (दासबोध दशक १ समास १ 'ग्रन्थारम्भलक्षण' एवं दशक २० समास १० 'विमलब्रह्मनिरूपण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.२ - (दासबोध दशक ११ समास ६ 'महन्तलक्षण',दशक १४ समास १ 'निःस्पृहलक्षण' एवं दशक १८ समास ३ 'नि:स्पृहसिकवण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.३ - (दासबोध दशक १४ समास ६ 'चातुर्यलक्षण', दशक १५ समास १ 'चातुर्यलक्षण' एवं दशक १५ समास ६ 'चातुर्यविवरण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.४ - (दासबोध दशक ७ समास ८ 'श्रवणनिरूपण', दशक ७ समास ९ 'श्रवणनिरूपण' एवं दशक १७ समास ३ 'श्रवणनिरूपण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.५ -(दासबोध दशक १६ समास ९ 'नाना उपासनानिरूपण',दशक १६ समास १० 'गुणभूतनिरूपण' एवं दशक १७ समास ५ 'अजपानिरूपण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.६ - (दासबोध दशक ५ समास ७ 'बद्धलक्षण',दशक ५ समास ८ 'मुमुक्षुलक्षण' एवं दशक ५ समास ९ 'साधकलक्षणनिरूपण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.७ - (दासबोध दशक ४ समास ७ 'दास्यभक्ति',दशक ४ समास ८ 'सख्यभक्ति' एवं दशक ४ समास ९ 'आत्मनिवेदनभक्ति' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.८ - (दासबोध दशक १ समास ९ 'परमार्थस्तवन', दशक १३ समास ७ 'प्रत्ययेविवरण' एवं दशक १९ समास ७ 'येत्ननिरूपण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.९ - (दासबोध दशक १२ समास ४ 'विवेकवैराग्यनिरूपण', दशक १२ समास ५ 'आत्मनिवेदन' एवं दशक १३ समास १ 'आत्मान्त्मविवेक' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.१० - (दासबोध दशक १ समास ४ 'सद्गुरुस्तवन', दशक १ समास ५ 'सन्तस्तवन' एवं दशक ८ समास ९ 'सिद्धलक्षण' पर आधारित)

प्रश्नपत्रिका क्र.११ - (दासबोध दशक १८ समास ५ 'करंटपरीक्षा निरूपण', दशक १९ समास ३ 'करंटलक्षण निरूपण' एवं दशक १९ समास ४ 'सदेवलक्षणनिरूपण' पर

आधारित)
प्रश्नपत्रिका क्र.१२ - (दासबोध दशक २० समास ४ 'आत्मानिरूपण',दशक २० समास ५ 'चत्वारजिनसनिरूपण' एवं दशक २० समास ८ 'देहेक्षेत्रनिरूपण' पर आधारित)

प्रस्तावना

अभ्यासेच्छुक भाइयों और बहनों,

'पत्रद्वारा दासबोध अध्ययन' (प.दा.अ.) उपक्रम के विषय में जानने से पूर्व 'श्रीमद् दासबोध' अर्थात् दासबोध ग्रन्थ के स्वरूप के बारे में जानकारी प्राप्त करना उचित होगा। समर्थ रामदास स्वामी विरचित दासबोध ग्रन्थ में कुल २० दशक (सर्ग) हैं, प्रत्येक दशक में १० समास (अध्याय) समाहित हैं। दासबोध की रचना 'ओवी' छन्द में की गई है।अतः दासबोध की किसी भी ओवी की सन्दर्भ संख्या देते समय दशक-समास-ओवी (उदा. दशक १- समास १- ओवी १ = १.१.१)
इस रूप में दी जाती है।

सन् १९७८ में 'सज्जनगड' नामक मासिक पत्रिका के माध्यम से 'पत्रद्वारा दासबोध अध्ययन' नामक उपक्रम का आरम्भ किया गया। 'सज्जनगड' मासिक पत्रिका के, नवम्बर' १९७८ में प्रकाशित अंक में इस प.दा.अ. उपक्रमविषयक प्रथम लेख प्रकाशित किया गया। इस लेख में एक समास पर आधारित पांच प्रश्न दिये गए थे। तदुपरान्त 'सज्जनगड' पत्रिका में प्रति मास प.दा.अ. की प्रश्नपत्रिका प्रकाशित होने लगी। कुल १७६ अभ्यासार्थियों ने प्रथम वर्षीय पाठ्यक्रम का अध्ययन सफलतापूर्वक पूर्ण किया।इन सभी अभ्यासार्थियों को २६ दिसम्बर १९७९ के दिन सज्जनगड की पावन स्थली पर श्रीसमर्थ रामदास जी की समाधि के सन्निध प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् प.दा.अ. के द्वितीय वर्षीय पाठ्यक्रम का एवं सन् १९८० में तृतीय वर्षीय पाठ्यक्रम का आरम्भ किया गया। अभ्यासार्थियों की संख्या में दिनोंदिन वृद्धि होने लगी, परिणामतः 'दासबोध प्रवेश', 'दासबोध परिचय' और 'दासबोध प्रबोध' स्तरीय पाठ्यपुस्तकों की रचना की गई। आगे चल कर प्रत्येक स्तर के लिये समीक्षकांचा मार्गदीप नामक पुस्तकें तथा अभ्यासार्थियों की सुविधा के लिये हर ओवी के नीचे उस ओवी का भावार्थ निदर्शित करने वाली पुस्तकें भी बनाई गईं।

कालान्तर में यह विचार बना कि अभ्यासार्थियों को तीन वर्षीय पाठ्यक्रमों के लिये प्रतिवर्ष पृथक् पृथक् पुस्तकें देने के बजाय क्यों न उन्हें इस प.दा.अ. उपक्रम में प्रवेश लेते समय ही दासबोध ग्रन्थ तथा तीनों वर्षों के पाठ्यक्रम की प्रश्नपत्रिकाएं इकट्ठे दे दी जाएं। इस कारण से अभ्यासार्थियों को दासबोध ग्रन्थ उपलब्ध होगा और इस तीन वर्षीय पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के बाद वे समग्र दासबोध ग्रन्थ का वाचन या पाठ भी कर सकेंगे। साथ ही इस उपक्रम के अन्तर्गत यदि तीन वर्षों के बाद का कोई पाठ्यक्रम बनाया जाए, तो किसी अन्य पुस्तक को खरीदे बिना ही अभ्यासार्थी वह अध्ययन पूरा कर सकेंगे। ऐसा कोई नया पाठ्यक्रम बनाने पर विचार किया जा रहा है।

हम ने यह विचार प.दा.अ. उपक्रम की संचालक संस्था 'समर्थ सेवा मण्डल' के समक्ष प्रस्तुत किया और इस संस्था ने समर्थभक्त बाबा बेलसरेजी के भाष्य से संवलित 'सार्थ दासबोध' ग्रन्थ ही कम कीमत पर उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। अब यह 'दासबोध' बन कर तैय्यार है। इस कार्य के लिये हम

समर्थ सेवा मण्डल के ऋणी रहेंगे। इस प्रकार प.दा.अ. उपक्रम में प्रवेश लेते समय ही अभ्यासार्थियों को यह दासबोध ग्रन्थ उपलब्ध हो सकता है। हर घर तक दासबोध पहुंचाने के बारे में माननीय सम्पादक द्वारकानाथ वासुदेव उपाख्य अप्पा केळकर जी द्वारा देखा गया स्वप्न अब साकार हो चला है।

समर्थ सेवा मण्डल संस्था के सुदृढ आधार को पा कर ही प.दा.अ. उपक्रम का शुभारम्भ हुआ। इस संस्था के आधार से ही अब श्रीग्रन्थराज दासबोध अध्ययन **(श्री.दा.अ.)** की भी सुचारु प्रगति हो रही है और आगे भी होती रहेगी। हम सभी श्री.दा.अ. के माध्यम से समर्थ सेवा मण्डल के सत्कार्य में गिलहरी का सा योगदान कर रहे हैं। यह भी एक प्रकार से समर्थ सेवा ही है।श्रीसमर्थ जी के चरणकमलों में प्रार्थना है कि आप सभी को समर्थ कृपाप्रसाद का लाभ प्राप्त हो।

॥ जय जय रघुवीर समर्थ ॥

दासबोध प्रवेश पाठ्यक्रम

प्रश्नपत्रिका - १

(दासबोध दशक १ समास १ 'ग्रन्थारम्भलक्षण' पर आधारित **)**

प्र १) अधोलिखित ओवियों ('ओवी' छन्द) में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

१. नाना - - - - सम्मती। - - - - - वेदान्त श्रुती।आणि मुख्य - - - - - । शास्त्रेंसहित॥

२. नाना धोके - - - - -। नाना किन्त - - - - । नाना - - - संसाराचे। नासती श्रवणें॥

३. - - - - योगें देव। निश्चयें पावती - - - । ऐसा आहे - - - -। ईयें ग्रन्थी॥

प्र २) अधोलिखित कथन सही हैं या गलत ? गलत हों तो सही का उल्लेख कीजिये।

अ) दासबोध ग्रन्थरचना के लिये केवल भगवद्गीता ही आधारग्रन्थ है।

ब) केवल आत्मप्रचीति को आधार बना कर ही श्रीसमर्थजी ने दासबोध रचना की है।

क) सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़े बिना ही, वाचक को, किसी ग्रन्थ पर टीका करने का अधिकार रहता है।

प्र ३) दासबोध ग्रन्थ की फलप्राप्ति निरूपित करने वाली दस ओवियों की केवल क्रमसंख्या लिख कर अर्थ लिखिये।

प्र ४) निम्नलिखित ओवीचरणों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिये ।

१) अमृत सेवितांच पावला। मृत्य राहो॥

२) जयाचा भावार्थ जैसा। तयास लाभ तैसा॥

प्र ५) क्या आप ने पहले कभी दासबोध का वाचन किया है ? दासबोध अध्ययन के संकल्प का अपना प्रयोजन कृपया दस पंक्तियों में विशद कीजिये।

अथवा

पहले कभी दासबोध वाचन करने पर आपने कैसी सन्तुष्टिकारक अनुभूति प्राप्त की, कृपया दस पंक्तियों में विशद कीजिये।

प्रश्नपत्रिका - २

(दशक १२ समास १ 'विमललक्षण' पर आधारित **)**

प्र १) प्रपंच (गृहस्थी) न करते हुए केवल परमार्थ साधना करें तो सर्वसामान्य व्यक्ति पर कौन सी विपत्तियां आती हैं, इसके विपरीत केवल प्रपंच-गृहस्थी ही करें तो उसे कौन सी विपत्तियों का सामना करना पड़ता है ? श्रीसमर्थ जी ने इस बारे में क्या कहा है ?

प्र २) प्रपंच और परमार्थ इन दोनों क्षेत्रों में यश प्राप्ति के लिये यहां कौन सा विशेष गुण बताया गया है ?

प्र ३) इस समास में श्रीसमर्थजी ने कौन से उर्दू शब्दों का प्रयोग कियाहै ?

प्र ४) निम्नलिखित २ उद्धरणों के बारे में पांच पंक्तियों में स्पष्टीकरण लिखिये।

१) 'जीवसृष्टी विवेकें चाले'

२) ' प्रपंची जो अप्रमाण। तो परमार्थी खोटा॥'

प्र ५) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

१) सुखी असतो - - - - -। दुःखी होतो - - - - ॥

२) संसारी असता - -। तोचि जाणावा - - - ।

३) म्हणौन - - - - - - । धन्य तयाचें महिमान। जनीं राखे - - - -। तोचि येक॥

प्रश्नपत्रिका - ३

(दशक १२ समास २ 'प्रत्ययनिरूपण पर आधारित **)**

प्र १) नीचे 'अ' परिच्छेद में ओवीचरण के पूर्वार्द्ध तथा 'ब' परिच्छेद में उत्तरार्द्ध दिये गए हैं।

उनमें से समीचीन जोडियां मिलाइये।

'अ'	'ब'
१) अचूक येत्न करवेना।	१) तंव तो सुगन्ध कळेना ।
२) जंवरी चन्दन झिजेना।	२) अन्तरपरीक्षा नेणती।
३) पेरिलें ते उगवतें।	३) त्यास मानिती लहानथोरें।
४) आपणास आहे मरण।	४) म्हणौन केलें तें सजेना।
५) लोक नाना परीक्षा जाणती।	५) म्हणौन राखावें बरेंपण।
६) बोलतो खरें चालतो खरें।	६) उसिणें द्यावें घ्यावें लागतें।

प्र २) अधोलिखित कथन सही हैं या गलत ? (गलत हों तो सही का उल्लेख कीजिये)

१. जगत में एक व्यक्ति सुखी तो दूसरा दुःखी होता है जिसके मूल में है उस का 'प्रारब्ध' अर्थात् पूर्वसंचित कर्म।

२.यदि लोगों की दृष्टि में हमें 'सज्जन' बनना है, तो लोगों द्वारा किये गए उत्पीड़न को भी सहना होगा।

३. व्यक्ति के सद्गुण ज्ञात होने पर भी जनता के अन्तर्मन में उसके प्रति दुर्भावना दूर नहीं होती।

४. परनिन्दा और अपनों के प्रति पक्षपात - ये सामान्य व्यक्ति के लक्षण हैं।

५. किसी व्यक्ति की अभिव्यक्ति विधा को माध्यम बना कर 'दक्ष' व्यक्ति उसकी मनःस्थिति जान सकता है।

प्र ३.अ) सर्वसामान्य व्यक्ति की वासनाओं और भावनाओं का स्वरूप कैसा होता है ?

ब) श्रीसमर्थ जी के अनुसार मनुष्य किन कारणों से अपयश पाता है ?

प्र ४) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

१) जो आपला - - - नेणे।तो - - - - काये जाणे। - - सांडितां दैन्यवाणे। - - लोक॥

२) - - - - जे मानेना। तेथें - - - राहावेना। - - तोडून जावेना। कोणीयेकें॥

३) - - - - आहे मरण। म्हणौन राखावें - - - - ।कठीण आहे - - - । - - - - ॥

प्र ५) दासबोध के इस (दशक १२ समास २) में से यदि तीन ओवियों का फलक बना कर अपने घर में लगाना चाहें, तो आप किन तीन ओवियों का चयन करेंगे ?

प्रश्नपत्रिका - ४

(दशक २ समास २ 'उत्तमलक्षण' पर आधारित **)**

प्र १ अ) अधोलिखित अर्थ जिन ओवीचरणों में समाहित हो, वे सम्पूर्ण ओवियां लिखिये।

१. विवेक के बल से सत्य के मार्ग पर दृढ़ता से चलते रहें।
२. धूम्रपान तथा मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करना चाहिये।
३. परस्त्री के प्रति पापदृष्टि नहीं रखनी चाहिये।
४. कभी भी विद्याप्राप्ति तथा उसकी पुनरावृत्ति का परित्याग नहीं करना चाहिये।
५. निरन्तर कष्ट करने पड़ें तो भी उससे क्षुब्ध नहीं होना चाहिये।

प्र १ ब) श्रीसमर्थजी ने किस हेतु से इस समास में 'उत्तम लक्षणों' का निरूपण किया है ?

प्र २) इस समास में वर्णित विषयानुसार किसी सभा में उपस्थित रहने पर एक श्रोता या वक्ता के रूप में हमें किन नियमों का पालन करना चाहिये ?

प्र ३) निम्नलिखित ओवीचरणों के अर्थ स्पष्ट कीजिये।

१. प्रीतीवीण रुसों नये।चोरास वोळखी पुसों नये।
२. बोलिला बोल विसरों नये। प्रसंगी सामर्थ्य चुकों नये।
३. वैरियांस दण्डू नये। शरण आलियां।

प्र ४) अधोलिखित मुद्दों के विषय में श्रीसमर्थजी का उपदेश एक वाक्य में लिखिये।

१. अपना आहार एवं निद्रा
२. अपने वस्त्र
३. अपनी वाणी
४. अपना द्रव्यार्जन

प्र ५) 'इस समास में श्रीसमर्थजी के बोध का स्वरूप ऐहिक और पारमार्थिक, दोनों प्रकार का है' - इस कथन को स्पष्ट कीजिये।

प्रश्नपत्रिका - ५

(दशक ११ समास ३ 'सिकवणनिरूपण' पर आधारित **)**

प्र १) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

१. ऐक - - - - - - लक्षण। - - - जाऊ नेदी येक क्षण।- - - - - - - - ज्ञान। बरें पाहे॥

२. ज्या ज्याचा जो - - - । तेथें असावें - - - - - ।

३. याकारणें - - - - ।- - - असावें मन। तरी मग - - - भोजन। गोड - - ॥

प्र २ अ) इस समास की आरम्भिक ३,४,५ और ६ वीं ओवियों में श्रीसमर्थजी ने सर्वसामान्य व्यक्ति के जीवन का कैसा चित्र प्रस्तुत किया है ? ऐसे व्यक्ति के लिये ७ वीं ओवी में किस विशेषण का प्रयोग किया है ?

प्र २ ब) आलस्य नामक दुर्गुण की श्रीसमर्थजी ने किस प्रकार निन्दा की है ?

प्र ३ अ) अधोलिखित अर्थ जिन ओवियों या ओवीचरणों में समाहित है, वे सम्पूर्ण ओवियां लिखिये।

१. जो भी कुछ है वह सब ईश्वर का है, इस निश्चय से व्यवहार करें, तो मनुष्य का उद्वेग समूल निर्मूल हो जाता है।

२. भोजन की मधुरता का अनुभव पाने के लिये मन की एकाग्रता आवश्यक है।

३. जीवन में अब इसके आगे तो विवेकपूर्ण आचरण करें और इहपरलोक साधें।

प्र ३ ब) क्या आप मानते हैं कि यह समास, प्रपंच एवं परमार्थ ,दोनों ही क्षेत्रों में अपने शिष्यों की सुयशप्राप्ति के लिये श्रीसमर्थजी के संकल्पभाव को प्रमाणित करने वाला महत्त्वपूर्ण समास है ? प्रायः दस पंक्तियों में अपने विचार लिखिये।

प्र ४) प्रायः तीन सौ वर्षपूर्व विद्यमान समाज के समक्ष श्रीसमर्थजी ने एक आदर्श दिनचर्या प्रस्तुत की। उस में कौन से तथ्य आज भी अंगीकरणीय हैं?

प्र ५) अधोलिखित प्रश्नों के माध्यम से हम आपकी अभ्यासपद्धति को समझना चाहते हैं, कृपया उत्तर दीजिये।

१. क्या आप प्रश्नपत्रिका पढ़ते ही तत्काल लेखन शुरु करते हैं या प्रश्न पढ़ने पर पुनः कई बार समास वाचन कर के अपना उत्तर लिखते हैं ?

२. क्या आप समास में वर्णित विचारों का अभ्यास करने हेतु कोई पृथक् कॉपी बना कर उस में महत्त्वपूर्ण ओवियों का संग्रह करते हैं ?

३. कोई ओवी पढ़ते ही तुरन्त उसका अर्थ पढ़ते हैं या पूर्ण समास पढ़ने के बाद अर्थों का वाचन करते हैं ?

४. क्या आप अपने लिखित उत्तर किसी अन्य व्यक्ति को पढ़ कर सुनाते हैं ?

५. एक बार लिखी गई उत्तरपत्रिका यदि आपको सन्तुष्टिदायक न लगे, तो क्या आप पुनर्लेखन करते हैं ?

प्रश्नपत्रिका - ६

(दशक ४ समास ३ 'नामस्मरण भक्ति' पर आधारित)

प्र १) सन्दर्भसहित अर्थ स्पष्ट कीजिये। (लेखनसीमा ५ पंक्ति प्रति उक्ति)

अ) 'नामें पाषाण तरलें।'

ब) 'हळाहळापासून सुटला। प्रत्यक्ष चन्द्रमौळी॥'

प्र २) 'अ' परिच्छेद में लिखित शब्दसमूह के सामने 'ब' परिच्छेद में निहित नामों में से चुन कर समीचीन नाम लिखिये।

'अ'	'ब'
जनता को हरिनाम की महिमा का बखान करने वाले	वाल्मीकि
उलटा नाम जपने वाले	अजामिल
नामस्मरण से पुनीत हुए	विश्वेश्वर
नाना आघातों से मुक्त हुए	प्रह्लाद

प्र ३) इस समास में कहां आप को प्रतीत हुआ कि सामान्य जनों को कोई भी मुद्दा समझाने के लिये श्रीसमर्थजी अतिशय विस्तारपूर्वक निरूपण करते हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये।

प्र ४) नामस्मरण के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले किन्हीं पांच लाभों का उल्लेख कीजिये।

प्र ५ अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

१. - - - नामामध्यें - - येक।म्हणतां होतसे - - - । नाम स्मरतां - - - - । होईजे स्वयें॥
२. - - स्मरें निरन्तर।ते जाणावें - - - - - । महादोषांचे - - - - ।- - - - नासतीं॥
३. - - संकटें - - - ।- - विघ्नें - - - - । - - - - - पाविजेतीं। - - - - -॥

प्र ५ ब) आजीवन केवल रामनामस्मरण का प्रसार करने वाले आधुनिक कालीन किसी सन्त का नामोल्लेख कीजिये।क्या आपने उनके लिखे किसी ग्रन्थ का वाचन किया है

प्रश्नपत्रिका - ७

(दशक १२ समास ९ 'येत्नसिकवण' पर आधारित **)**

प्र १) इस समास में समाहित, अधोलिखित अर्थ सूचित करने वाली ओवियां लिखिये।

१. हर व्यक्ति यह जान ले कि छोटा या बड़ा, कोई भी काम किये बिना नहीं हो सकता।
२. भक्ति, ज्ञान, वैराग्य एवं योग से, तथा नाना साधनों के द्वारा भवरोग नष्ट हो जाता है।
३. मन्दबुद्धि व्यक्ति के पास सारी अव्यवस्था ही जान पड़ती है।संसार में बुद्धिमत्ता को छोड़ अन्य कुछ भी महत्त्व नहीं रखता।

प्र २) श्रीसमर्थजी के अनुसार प्रयत्नशील व्यक्ति की जीवनचर्या कैसी होनी चाहिये, सात आठ वाक्यों में विशद कीजिये।

प्र ३) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

१. अन्तरीं नाहीं - - - - - । येत्न - - - पुरता। - - - - - - वार्ता। तेथें कैंची॥
२. जैसें - - - बोलावें। तैसेची - - - - - - । मग - - - - - स्वभावें। अंगी बाणें॥
३. येथें - - - फिटली। बुद्धि येत्नीं - - - - । - - - - - - वाढली। - - - - ॥

प्र ४) इस समास में श्रीसमर्थजी ने कौन सा बहुमूल्य सन्देश दिया है, संक्षेप में लिखिये।

प्र ५) श्रीसमर्थजी द्वारा प्रतिपादित, महन्तों के लिये अपरिहार्य लक्षणों में से पांच के विषय में जानकारी दीजिये।

प्रश्नपत्रिका - ८

(दशक १२ समास १० 'उत्तमपुरुषनिरूपण' पर आधारित **)**

प्र १ अ) इस समास में श्रीसमर्थजी ने जो प्रतिज्ञा की है, वह ओवी लिखिये।

प्र १ ब) कीर्तिरूप में अवस्थित रहने के लिये क्या करना होगा - इस विषयक दो ओवियां लिखिये।

प्र २) हमारी वाणी मधुर क्यों हो, इस विषय में श्रीसमर्थजी के विचार लिखिये।

प्र ३) निम्नलिखित ओवीचरणों की संक्षेप में व्याख्या कीजिये।

अ) तरतेन बुडों नेदावें।बुडतयासी।

ब) सुख पाहतां कीर्ती नाहीं।

प्र ४) श्रीसमर्थजी के मत में लोकप्रिय नेता के पास कौन सा मुख्य गुण होना चाहिये ?

प्र ५) अधोलिखित अर्थसूचक सम्पूर्ण ओवियां लिखिये।

१. लोगों को नाना प्रकार से परखते रहना चाहिये।

२. अन्न व्यर्थ गंवाना अधर्म है।

३. दूसरों को दुःख देना एक राक्षसी क्रिया है।

प्रश्नपत्रिका - ९

(दशक १८ समास ६ 'उत्तमपुरुषलक्षण' पर आधारित **)**

प्र १) इस समास में से अधोलिखित अर्थसूचक ओवियां लिखिये।

१. जिनके सहारे इहलोक व परलोक पार किया जा सकता है, ऐसे दो गुण विवेक और योजना समस्त गुणों के सारभूत हैं।

२. धर्मसंस्थापना करने वाले मानव ईश्वरी अवतार होते हैं। वे पूर्वकाल में भी थे, आज भी हैं और आगे भी आते रहेंगे।

प्र २) समास में निहित ओवियों को आधार बनाते हुए बताइये कि अधोलिखित कथन सही हैं

या गलत।

१. केवल वस्त्राभूषणों से ही मनुष्य-शरीर सुशोभित होता है।

२. समय और प्रसंग सदैव एक समान नहीं रहते। इसी कारण एक ही नियम निरन्तर कारगर नहीं साबित होता।

३. जिस पर भगवती तुळजाभवानी की कृपा हो, उसे विचारपूर्वक कार्य करने की आवश्यकता नहीं।

प्र ३) राक्षसी वृत्ति वाले व्यक्ति के प्रमुख लक्षण बताइये।

प्र ४) क्या आप मानते हैं कि इस समास में किसी उत्तम पुरुष का शब्दचित्र प्रस्तुत किया गया है ? वह व्यक्ति कौन हो सकता है ?

प्र ५) ओवियों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

१. - - - चि सावधाना।- - - काये - - - सूचना।

२. अति- - - वर्जावें।- - - पाहोन - - - । - - - - - न पडावें। - - - पुरुषें॥

३. सकळकर्ता - - - - ।तेणें - - आंगिकारु। - - पुरुषाचा - - - । - - - जाणें॥

प्रश्नपत्रिका - १०

(दशक १९ समास १० 'विवेकलक्षणनिरूपण' पर आधारित **)**

प्र १) इस समास में से ऐसी तीन ओवियां चुन कर लिखिये, जिनमें मानो श्रीसमर्थजी का व्यक्तिचित्र ही साकार होता हो।

प्र २) १२ वें दशक के १० वें समास में तथा इस समास में किसी एक ओवी की प्रथम पंक्ति प्रायः समान है, वह ओवीकौन सी है ?

प्र ३) इस समास में बताया गया है कि श्रीसमर्थस्थापित मठों में क्या क्या क्रिया-कलाप हुआ करते थे। इस बारें में पांच वाक्यों में विवरण लिखिये।

प्र ४) संक्षिप्त उत्तर दीजिये।

अ. प्रायः शक्तिमान् व्यक्ति को ही अनेकविध विचार बताना क्या उचित है ?

ब. कार्य की व्यापकता बढ़ाते समय महन्त को कौन सी सावधानी रखनी चाहिये ?

प्र ५ अ) निष्क्रियता त्याग कर भक्तिमार्ग का प्रसार करना चाहिये - यह सूचित करने वाली दो ओवियां लिखिये।

प्र ५ ब) आपके मत में दासबोध का प्रचार-प्रसार क्यों होना चाहिये, विशद कीजिये।

प्रश्नपत्रिका - ११

(दशक १४ समास ६ 'चातुर्यलक्षण' पर आधारित **)**

प्र १) अधोलिखित चरण जिनमें समाहित है, वे सम्पूर्ण ओवियां लिखिये।

१. अन्यायी तो दैन्यवाणा।

२. तेणें आपण सुखी व्हावें।

३. पतित करावें पावन।

प्र २) इस समास में समाहित ओवियों को आधार बना कर निम्नलिखित ओवीचरणों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिये।

१. उत्तम गुण अभ्यासितां येती।

२. तनें मनें झिजावें। तेणें भले म्हणोन घ्यावें।

प्र ३.१) किस एक ओवी में भाग्यवान् और करण्टा पुरुष का एक साथ उल्लेख किया गया है ?

३.२) लोकसंग्रह क्यों बढ़ाना चाहिये ? इसे किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है ?

प्र ४) इस समास में निहित ओवियों को आधार बना कर बताइये कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत।

१. कार्य की व्याप्ति बढ़ने से ही वैभव में वृद्धि होती है।

२. बाह्य रूप सुन्दर हो तो अन्तरंग बुरा भी चल जाता है।

प्र ५.१) क्या इस उपक्रम के माध्यम से अभ्यासार्थियों ने दासबोध का प्रचार-प्रसार करने के लिये कुछ पाथेय प्राप्त किया है ?

५.२) आपके मत में सज्जनगड पर आयोजित किये जाने वाले अभ्यासार्थी सम्मेलन में किन समस्याओं पर चर्चा की जानी चाहिये ?

प्रश्नपत्रिका - १२

(दशक २० समास १० 'विमलब्रह्मनिरूपण' पर आधारित **)**

प्र १) इस समास में से निम्नलिखित अर्थसूचक सम्पूर्ण ओवियां लिखिये।

१. जो ब्रह्मतत्त्व दृश्य के बाहर-भीतर तथा ब्रह्माण्ड के उदर में भी समाया हुआ है, उस शुद्ध ब्रह्म जैसा अन्य कुछ भी नहीं।

२. पिण्ड-ब्रह्माण्ड का निरास होने के कारण ब्रह्मतत्त्व ही निराभास बन कर अवस्थित रहता है, तब यहां-वहां का समस्त विस्तार शून्य बन जाता है।

३. ब्रह्मतत्त्व के विषय में शब्द तथा कल्पना भी निरर्थक साबित होते हैं, अतः कल्पनातीत ब्रह्म का ज्ञान पाने के लिये विवेक ही एकमात्र साधन है।

प्र २) दासबोध सदृश महान् ग्रन्थ का कृतित्व श्रीसमर्थजी ने स्वतः स्वीकार नहीं किया है। इस बारे में उनके मन्तव्य के विषय में सविस्तार लिखिये।

प्र ३) दासबोध ग्रन्थ का अध्ययन करने के बारे में श्रीसमर्थजी ने साधकों को क्या निर्देश दिये हैं?

प्र ४) नीचे 'अ' और 'ब' वर्ग में ओवियों के अर्धचरण अव्यवस्थित लिखे गए हैं। उनका सही मिलान कीजिये।

जालें साधनाचें फळ।	कृपा केली दाशरथीने।
समस्तांचे मस्तकीं राहे।	आवघे दाटलें अपार।
आकाशाचा डोहो भरला।	माध्याह्नीं मार्तण्ड जैसा।
ब्रह्मासी शब्दचि लागेना।	संसार जाला सफळ।
कल्पना कल्पूं शकेना।	कदापि नाहीं उचंबळला।

प्र ५) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिये।

१. क्या आप 'श्री.दा.अ.' उपक्रम में, आगे भी सहभागी होंगे ?

२.स्वाध्यायलेखन के लिये आप ने कितनी बार समास-वाचन आवश्यक समझा ? प्रत्यक्ष लेखन के लिये कितना समय लगता था ?

३. आपके पास दासबोध ग्रन्थ न हो और आप को उपरिलिखित प्रश्नपत्रिका हल करने के लिये दी जाए, तो क्या आप उत्तर लिख पाएंगे ?

४. क्या आपने, आपके द्वारा भेजे गए स्वाध्यायों तथा परीक्षणों के प्रतिलिपियों के संकलन की फाईल बना रखी है ?

५. क्या आपने समस्त १२ स्वाध्याय पूर्ण कर लिये हैं ?

दासबोध परिचय

प्रश्नपत्रिका -१

(दशक १८ समास ४ 'देहदुर्लभनिरूपण' पर आधारित **)**

प्र १) इस समास में से अधोलिखित अर्थसूचक ओवियां ढूंढ़ कर लिखिये।

१. देहधारी होने के कारण मानव ग्रन्थलेखन, लिपिपरिज्ञान आदि कर सकता है।

२. देह के माध्यम से ही विपुल श्रवण-मनन कर परमात्म-प्राप्ति सम्भव हो पाती है।

३. ब्रह्माण्ड का अतिविकसित फल है नरदेह।

प्र २) अधोलिखित काव्यपंक्तियों का प्रायः पांच पंक्तियों में कल्पना-विस्तार कीजिये।

१. देहयाकरितां होईजे वेर्थ। आणि धन्य॥

२. देहे परलोकीचें तारूं।

प्र ३) 'जनी जनार्दन' (जन जन में ईश्वरदर्शन) का प्रतिपादन करते हुए श्रीसमर्थजी ने ऐसे उपदेशों में भी समुचित रूप से व्यवहारवाद प्रकट किया है। इस का निदर्शन करने वाली ओवियां लिखिये।

प्र ४) प्रायः दस पंक्तियों में समग्र समास का सारांश लिखिये।

प्रश्नपत्रिका - २

(दशक ३ 'स्वगुणपरीक्षा २**(**अ**)**,३**(**ब**)**,४**(**क**)**,एवं ५**(**ड**)** पर आधारित **)**

प्र १) उपरितन समासों में श्रीसमर्थजी ने एक 'करण्टा' (अभागा) व्यक्ति का जीवनवृत्तान्त निरूपित किया है। उसे प्रायः १५ पंक्तियों में लिखिये।

प्र २) इन समासों में निहित वर्णनानुसार किसी व्यक्ति को कब माता की ममता और ईश्वर की कृपा का स्मरण होता है ? सम्बन्धित ओवियां लिखिये।

प्र ३) इन समासों में हम कहां जान पाते हैं कि श्रीसमर्थजी 'बालकों के मानसशास्त्र' के ज्ञाता थे ? ओवियां उद्धृत कीजिये।

प्र ४) अधोलिखित ओवीचरण जिन में हैं वे सम्पूर्ण ओवियां लिखिये।

१. जन्मवरी स्वार्थ केला।

२. म्हणौन धन्य धन्य ते प्रपंची जन।

३. लेकुरें उदंड जालीं।

प्रश्नपत्रिका - ३

(द.२ स.१ 'मूर्खलक्षण' और द.२ स.१० 'पढतमूर्खलक्षण' पर आधारित **)**

प्र १) अधोलिखित अर्थसूचक ओवियां लिखिये।

१. अहंमन्यता के कारण जो व्यक्ति दूसरों की बुराई करता है, वह एक पढतमूर्ख है।
२. अकारण हास्य करने वाला, उपयुक्त सलाह न मानने वाला व्यक्ति एक मूर्ख होता है।
३. स्वयं बहुश्रुत होते हुए जो व्यक्ति दूसरों के वक्तव्यों की अवमानना करता है, वह पढतमूर्ख है।
४. पुत्र एवं पत्नी को इकलौता सहारा मान कर जो व्यक्ति ईश्वर को भूल जाता है, वह एक मूर्ख है।
५. संसार के प्रति आस्था रखते हुए जो व्यक्ति परमार्थ का तिरस्कार करता है, वह एक पढतमूर्ख है।

प्र २) निम्नलिखित ओवियों का अर्थ विशद कीजिये।

१. होत असतां श्रवण।देहास आले उर्णेपण।क्रोधें करी चिणचिण।तो येक पढतमूर्ख॥
२. हस्त बांधीजे उर्णतंतें।लोभें मृत्य भ्रमरातें।ऐसा जो प्रपंची गुन्ते।तो येक पढतमूर्ख॥

प्र ३) श्रीसमर्थजी ने मूर्खों के दो प्रकार विशद किये हैं, उन दोनों में क्या अन्तर है ?

प्र ४) विद्यार्थियों के समक्ष बोधप्रद भाषण करते हुए आप 'मूर्खलक्षण' समास में से किन किन ओवियों का सन्दर्भ देना चाहेंगे, वे ओवियां लिखिये।

प्रश्नपत्रिका - ४

(द.२ स.५-'रजोगुणलक्षण',स.६-'तमोगुणलक्षण',स.७'सत्त्वगुणलक्षण' पर आधारित**)**

प्र १) त्रिगुणों के परिप्रेक्ष्य में किन प्रमुख वर्गों में मनुष्यों का वर्गीकरण किया जा सकता है ? त्रिगुणों का निश्चित फल सूचित करने वाली ओवी लिखिये।

प्र २) अधोलिखित ओवियों की विपरीतार्थक ओवियां 'सत्त्वगुणलक्षण' समास में से चुन कर लिखिये।

१. भांडण लाऊन द्यावें। स्वयें कौतुक पाहावें।

२. परपीडेचा सन्तोष।निष्ठुरपणाचा हव्यास।संसाराचा नये त्रास। तो तमोगुण॥

प्र ३) अधोलिखित उदाहरण में निर्दिष्ट प्रकार से गुण का नाम व आधारभूत ओवीसंख्या लिखिये।

क्रिया	गुण का नाम	आधारभूत ओवी की क्रमसंख्या
१. सन्तों की पालकी आते ही दर्शन के लिये दौड़ना	सत्त्वगुण	२-७-७७ (द-स- ओवी)
२.हरिभजन करने के लिये तत्परता		
३.मनोनुकूल कुछ न होने पर आत्महत्या करना		
४.देवालय के जीर्णोद्धार का प्रयास		
५.फलों से भरे वृक्षों का,मन्दिरों का विध्वंस		
६. प्रातःस्नान में रुचि		
७.'मैं चतुर,मैं बलवान्' ऐसी डींगे मारना		
८.मन्नत पूरी न होने पर देवमूर्ति का भंजन		
९.अपने जीवन की परवाह न करते हुए दूसरों क प्राणरक्षा		
१०.कैसे होगा इस जगत् का अन्त, यह चिन्ता करना		

प्र ४) श्रीसमर्थजी ने प्रपंचवासनाओं को उद्दीपित करने वाले रजोगुण से छुटकारा पाने का उपाय जिन ओवियों में सूचित किया है, वे तीन ओवियां लिखिये।

प्र ५) 'युद्ध करना' यह एक तामसी कृति होते हुए भी श्रीराम अथवा श्रीकृष्ण को किन कारणों से, उनकी ऐसी कृतियों के लिये तमोगुणी नहीं कहा जा सकता ?

प्रश्नपत्रिका - ५

(द.२ स.८-'सद्विद्यानिरूपण', स.९-'विरक्तलक्षण' पर आधारित)

प्र १) अधोलिखित ओवियां लिख कर सन्दर्भ सहित अर्थविवेचन कीजिये।
(१) २-८-३१, (२) २-८-१३, (३) २-९-२६

प्र २) श्रीसमर्थजी के मतानुसार जो सद्‌गुण प्रायः एकत्रित युग्म के रूप में नहीं पाए जाते, ऐसे गुणों की १५ जोड़ियां बना कर लिखिये।

प्र ३) २-८-१६ से २-८-२३ की क्रमसंख्या वाली ओवियों के आधार पर सद्‌विद्‌या-सम्पन्न व्यक्ति का अन्तर्बाह्य वर्णन कीजिये।

प्र ४) श्रीसमर्थप्रतिपादित 'विरक्त', समाज से अशिष्टतापूर्ण व्यवहार करने वाला 'एकान्तिक' मनुष्य नहीं, अपितु लोकसंग्रहकर्ता नेता होता है।इस मन्तव्य की सत्यता स्पष्ट कीजिये।

प्र ५.१) क्या आप को दैनन्दिनी (डायरी) लिखने की आदत है ?

प्र ५.२) आप उस में, दिन भर अनुभव की गईं अच्छी-बुरी घटनाएं ही लिखते हैं या फिर आत्मचिन्तन वाले विचार भी ?

प्र ५.३) क्या आप दैनन्दिनी में, भविष्यकाल में करने योग्य कार्यों के विषय में भी लिखते हैं ?

प्र ५.४) यदि दैनन्दिनी न लिखते हों, तो उस के कारण क्या हैं ?

प्रश्नपत्रिका - ६

(द.११ स.१०-'निःस्पृहवर्तणूक' और द.१५ स.२-'निःस्पृहव्याप' पर आधारित**)**

प्र १) 'महन्त को अन्तरात्मा सदृश होना चाहिये' इस विषय में द.११ स.१० में कैसा विवेचन किया गया है ?

प्र २) श्रीसमर्थजी का मानो आत्मचरित्र ही प्रतीत होता हो, ऐसी विशिष्ट पांच ओवियां (द.११-१०) में से चुन कर लिखिये।

प्र ३) समर्थसम्प्रदाय के प्रसार कार्य के बारे में आप को द.११-१० में से क्या-क्या जानकारी मिलती है ?

प्र ४) महाराष्ट्र की तत्कालीन जनस्थिति का वर्णन श्रीसमर्थजी ने द.१५-२ में किस प्रकार किया है ?

प्र ५.अ) अधोलिखित ओवियों के अर्थ लिखिये।
(१) १५-२-१४, (२) १५-२-२८, (३) १५-२-६ ।

प्र ५ ब) कल्पना कीजिये कि श्रीसमर्थजी के निवास से पुनीत गुहा में उन की प्रतिमा के आगे एक ओवी लिखनी है, तो आप द. १५-२ में से कौन सी ओवी का चयन करना चाहेंगे ? वह ओवी लिखिये।

प्रश्नपत्रिका - ७

(द.३ स.६-'आध्यात्मिकताप',स.७-'आधिभौतिकताप',स.-८'आधिदैविकताप'
पर आधारित**)**

प्र १) त्रिविध तापों के नाम तथा उनकी व्याख्यासूचक ओवियां लिखिये।

प्र २) अधोलिखित उदाहरण देख कर अन्य स्तम्भों की पूर्ति करिये।

कथन	ताप का नाम	ओवी की क्रमसंख्या
१.दादा जी का चष्मा खो गया	आधिभौतिक	३-७-४५
२. गन्ने के खेतों को दावेदार ने जला दिया		
३. यात्री का धन लुटेरे ने लूट लिया		
४.युवावस्था में माधवराव पेशवा को क्षयरोग हुआ		
५.स्वातन्त्र्यवीर सावरकर को कारायातनाएं झेलनी पड़ीं		
६.वृद्धावस्था में हर व्यक्ति इस ताप से ग्रस्त होता है		
७. जन्म से ही अन्धत्व पाना		

प्र ३) श्रीसमर्थकालीन राजनैतिक उत्पीडन, दुर्घटना तथा ससुराल में मिलने वाली यातनाओं का निदर्शन करने वाली एक-एक ओवी लिखिये।

प्र ४) सन्दर्भ सहित अर्थविवेचन कीजिये।

"ऐसी मर्यादा लाविली देवें। म्हणौनि नीतीने वर्तावें।"

प्र ५) विगत दस वर्षों के दौरान आप के लिये उद्वेगकारक किसी ताप का स्वानुभव हो तो संक्षेप में लिखिये। ('ताप' शब्द का अर्थ इन समासों के अनुरूप ग्रहण कीजिये)

प्रश्नपत्रिका - ८

(द.४ स.४-'पादसेवनभक्ति',स.५-'अर्चनभक्ति',स.-६'वन्दनभक्ति' पर आधारित)

प्र १) अधोलिखित अर्थसूचक सम्पूर्ण ओवियां लिखिये।

१. साधक श्रद्धापूर्वक अभिवादन करे,तो साधु उसके कल्याण की चिन्ता करने लगते हैं।

२.अपने पास पूजासामग्री है,यह कल्पना कर के वह ईश्वरचरणों पर अर्पित करनीचाहिये।

३.शास्त्र,गुरु एवं आत्मप्रचीति कसौटियों को पार करते हुए स्वयं वही ब्रह्मतत्त्व बनिये।

४.वन,उपवन, तपस्वियों के लिये पर्णकुटियों का निर्माण - जगन्नायक की ऐसी पूजा उसे ही अर्पण कीजिये।

प्र २) हिन्दू धर्म की विशेषतारूपी सहिष्णुतावृत्ति का बोध वन्दनभक्ति समास में किस रूप में दिया गया है ?

प्र ३) सद्गुरुचरणों के प्रति अनन्यनिष्ठा रखने के लिये श्रीसमर्थजी ने आग्रहपूर्वक क्यों प्रतिपादन किया है ?

प्र ४) "नमस्कार महिमा" के विषय में श्रीसमर्थजी क्या कहते हैं ?

प्र ५) निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत - स्पष्टीकरण सहित बताइये।

१. नमस्कार और साष्टांग नमन के बीच तारतम्य रखना चाहिये।

२. अर्चन भक्ति के लिये पूजनसामग्री की प्रत्यक्ष आवश्यकता होती है।

३. अपने कोई विशिष्ट देवीदेवता होते हुए किसी भी देवता को वन्दन करना ढोंग है।

प्रश्नपत्रिका - ९

(द.८, स.६-'दुश्चीतनिरूपण' पर आधारित)

प्र १) अधोलिखित अर्थसूचक सम्पूर्ण ओवियां लिखिये।

१. दुश्चित्तवृत्ति के साथ ही यदि आलस्य भी हो, तो मनुष्य के निद्राविलास में कमी ही कहां?

२. दुश्चित्त व्यक्ति की गृहस्थी किसी मूढ, संभ्रमित मनुष्य की अथवा अन्ध, मूक,बधिर मनुष्य की गृहस्थी जैसी होती है।

३. जो व्यक्ति सावधान, प्रयत्नशील और दक्ष हो, उसे अनायास ही मोक्षश्री की प्राप्ति होती है।

प्र २) आप के मत में, दुश्चित्तवृत्ति के परिणामस्वरूप प्रपंच एवं परमार्थ इन दोनों ही क्षेत्रों में सम्भावित हानि को संकेतित करने वाले, महत्त्वपूर्ण चार मुद्दे कौन से है ?

प्र ३) सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये।

१. लोहो परीसेसीं लागला।थेम्बुटा सागरी मिळाला॥

२. दुश्चीत बैसलासि दिसे। परी तो असतचि नसे॥

प्र ४) "आळसाला उसंत नाही" (आलस्य को फुरसत ही नहीं) इस प्रायः विरोधाभासी कथ्य में निहित सत्य को श्रीसमर्थजी ने किस प्रकार विशद किया है ?

प्र ५) अर्थान्तर जाने बिना केवलमात्र श्रवण करने वाले लोगों के लिये श्रीसमर्थजी ने पहले कौन सी उपमा का प्रयोग किया है तथा फिर कैसे स्वयं ही उस उपमा को भी अपर्याप्त प्रमाणित किया है ?

प्रश्नपत्रिका - १०

(द.११ स.५-'राजकारणनिरूपण' एवं द.१९ स.९-'राजकारणनिरूपण' पर आधारित)

प्र १) श्रीसमर्थप्रतिपादित जीवनविषयक चतुःसूत्री में राजकारण (राजनीति) की क्रमसंख्या सूचित करने वाली ओवी लिखिये।

प्र २) दासबोध ग्रन्थ की ओवियों को आधार बनाकर विशद कीजिये कि राजनीति कैसी होनी चाहिये एवं कैसी नहीं होनी चाहिये ?

प्र ३) समुदाय संघटन की इच्छा हो, तो एकान्तचिन्तन आवश्यक है ; यह प्रमेय श्रीसमर्थजी ने कैसे विशद किया है ?

प्र ४) निम्नलिखित ओवी का अर्थ प्रायः पांच पंक्तियों मे स्पष्ट कीजिये।

"येक मिरासी साधिती।येक सीध्या गवाविती।व्यापकपणाची स्थिती।ऐसी आहे॥"

प्र ५) श्रीसमर्थ रामदास जी केवल भक्तिमार्गी सन्त थे या राजनीतिपटु महन्त ? या, इन दोनों से भिन्न उनका कुछ अलग व्यक्तित्व था ? अपने विचार प्रस्तुत कीजिये।

प्रश्नपत्रिका - ११

(द.१८ स.७-'जनस्वभावनिरूपण' एवं द.१८ स.८-'अन्तर्देवनिरूपण' पर आधारित)

प्र १) निम्नलिखित ओवियों के अर्थ लिखिये।

(१) १८-७-६), (२) १८-७-२०, (३) १८-८-१६, (४) १८-८-२०

प्र २) इस तथ्य की सत्यता प्रायः दस पंक्तियों में प्रमाणित कीजिये कि द.१८-७ में मानव के पारलौकिक कल्याण जितना ही ऐहिक कल्याण का विचार भी प्रभावी रूप से प्रतिपादित किया गया।

प्र ३) तीर्थयात्रा की तुलना में सत्संग की महिमा अधिक रहने का विचार द. १८-८ में किस प्रकार निरूपित किया गया है ? अपने विचार दस पंक्तियों में प्रस्तुत कीजिये।

प्र ४) "यथार्थ देव कौन सा है" इस विषय पर द।१८-८ में श्रीसमर्थजी द्वारा प्रस्तुत विचार विशद

कीजिये।

प्र ५) द.१८-७ में से तीन ऐसी ओवियां लिखिये, जिन्हें आप फलक पर लिखने के लिये उपयुक्त मानते हों। इन्हीं ओवियों के चुनाव का अपना कारण भी बताइये।

प्रश्नपत्रिका - १२

(द.९ स.४-'जाणपणनिरूपण' पर आधारित)

प्र १) इस समास में से अधोलिखित अर्थसूचक ओवियां चुन कर लिखिये।

१.प्रपंच हो या परमार्थ, ज्ञानवान् व्यक्ति ही उनमें यश पाने के लिये पात्र रहता है, अज्ञानी तो व्यर्थ ही जीवनयापन करता है।

२. उत्तम गुण ही भाग्यशालिता का लक्षण है।स्पष्ट ही है कि जिस में यह लक्षण नहीं, वह व्यक्ति अवलक्षणी होता है।

३. ज्ञान न पाते हुए, बलपूर्वक कोटिशः साधन अपनाने पर भी कोई व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी नहीं बन सकता।

प्र २) श्रीसमर्थजी के मत में कुछ लोग सम्पन्न तो कुछ दुर्बल, कुछ मंगलकारक तो कुछ अमंगल, ऐसी भिन्नता समाज में क्यों दिखाई देती है ?

प्र ३) 'व्याप तितका सन्ताप' (जितनी व्यापकता उतना ही उद्वेग) क्या यह उक्ति श्रीसमर्थजी को मान्य है ? ओवी के आधार से प्रतिपादित कीजिये।

प्र ४) ओवी क्र २० से २३ में अज्ञान के कारण होने वाली हानि का कैसा वर्णन किया गया है ?

प्र ५ अ) दासबोध वाचन के लिये आप अपनी दैनन्दिन जीवनचर्या में कितना समय दे पाते हैं ? क्या किसी पृथक् कॉपी में आप कुछ नोट्स् लिखते हैं ?

प्र ५ ब) क्या आप मानते हैं कि दासबोध में वर्णित विचारों के कारण आप के स्वभाव एवं व्यवहार में किसी प्रकार का परिवर्तन हो रहा है ?

प्र ५ क) क्या "श्री.दा.अ." उपक्रम आपके लिये श्रीसमर्थजी के विचारों के अवगम में कुछ सहायक सिद्ध हुआ ?

प्र ५ ड) इस उपक्रम तथा दासबोध ग्रन्थ के प्रचार-प्रसार के लिये आप स्वयं किस प्रकार प्रयास कर सकते हैं ?

प्र ५ ई) क्या आप ने श्रीसमर्थजी से सम्बद्ध किन्हीं पुण्यक्षेत्रों की यात्रा की है ?

प्र ५ फ) क्या आप किसी दासबोध अध्ययन वर्ग में सहभागी हुए हैं ?

प्र ५ ग) क्या आपने सभी १२ स्वाध्याय पूर्ण किये हैं ? इससे अगला "दासबोध प्रबोध" अभ्यासक्रम पूर्ण करना चाहेंगे ?

दासबोध प्रबोध

प्रश्नपत्रिका - १

(द.१-१'ग्रन्थारम्भलक्षण',एवं द.२०-१० ' विमलब्रह्मनिरूपण' पर आधारित)

प्र १ अ) जिस एक ओवी में दासबोध ग्रन्थ का सारांश वर्णित है,वह ओवी लिखिये।

प्र १ ब) श्रीसमर्थजी के वचनानुसार द. १-१ में किन किन विषयों का निःसंशयात्मक वर्णन किया गया है ?

प्र २) छिद्रान्वेषी वृत्ति वाले टीकाकार की भूमिका कैसी होती है ? यह कैसे स्पष्ट किया गया है कि वाचक इस भूमिका में रह कर ग्रन्थ का पठन न करें।

प्र ३) "द. २०-१० में दासबोध के समग्र तत्त्वज्ञान का सारांश समाहित है" इस कथन की सत्यता प्रमाणित कीजिये।

प्र ४) निम्नलिखित ओवियों का अर्थ विवेचन कीजिये।

१. आता श्रवण केलियाचे फळ। (१-१-२८)

२. जाले साधनाचे फळ।(२०-१०-२६)

प्र ५ अ) दासबोध-अध्ययन किस प्रकार से करना चाहिये, इस बारे में द.२०-१०-३१ और ३२ वीं ओवियों में स्वयं श्रीसमर्थजी ने कैसा विवेचन किया है ?

प्र ५ ब) क्या आप दैनन्दिन उपासना पद्धति के अनुसार प्रतिदिन मनोबोध,दासबोध,करुणाष्टके आदि ग्रन्थों के कुछ अंशों का पाठ करते हैं ?

प्रश्नपत्रिका - २

(द.११-६'महन्तलक्षण',१४-६'निस्पृहलक्षण', १८-३'निस्पृहसिकवण' पर आधारित)

प्र १.१) वह ओवी लिखिये जिस में महन्त का अक्षरलेखन, बोलना एवं चाल-चलन के विषय में बताया गया है।

प्र १.२) श्रीसमर्थजी ने अपनी वाणी के बारे स्वयं ही जिस ओवी में अभिमत व्यक्त किया है, वह ओवी लिखिये।

प्र १.३) वह ओवी लिखिये जिसका अर्थ है - 'मानव देह दुर्लभ है, विवेक के द्वारा उसे सार्थ करना चाहिये।'

प्र २) द. ११-६ में प्रभु रामचन्द्रजी के किन गुणों का निर्देश किया गया है और वह किस सन्दर्भ में किया गया है ?

प्र ३) जनभावनाओं के प्रति सम्मान बनाए रखने के लिये निस्पृह व्यक्ति को अनेकविध संयमों

का पालन करना पड़ता है, एकान्तिकता उपयुक्त नहीं ; यह तथ्य प्रतिपादित करने वाली ५ ओवियां लिखिये।

प्र ४) द.१८-३ 'निस्पृहसिकवण' समास की क्रमसंख्या १२ से २० ओवियों के अर्थ का सारांश लिखिये।

प्र ५) श्रीसमर्थजी के सान्निध्य में रहने वाले पांच महन्तों के नाम तथा उनके मठों के स्थानों का निर्देश कीजिये।(महन्तों में स्त्रियां भी समाहित हैं)

प्रश्नपत्रिका - ३

(द.१४-६'चातुर्यलक्षण',१५-१'चातुर्यलक्षण',१५-६'चातुर्यविवरण' पर आधारित)

प्र १) निम्नलिखित ओवियों के अर्थ लिखिये।

१. पीतापासून कृष्ण जालें।(१५-६-१)

२. समजले आणि वर्तले।(१४-६-२५)

३. भेटभेटों उरी राखणें।(२५-१-३५)

प्र २) कल्पना-विस्तार कीजिये।

(१) १४-६-२३, (२) १५-१-२१, (३) १५-६-८

प्र ३) द. १५-६ की आरम्भिक पांच ओवियों में श्रीसमर्थजी ने लेखनक्रिया की महिमा कैसे निरूपित की है ?

प्र ४) टिप्पणियां लिखिये।

(१) रेखा तितुकी पुसोनि जाते।

(२) पडी घेऊन उलथावें।

प्र ५) "मनुष्य को चातुर्यपूर्वक दिग्विजय अर्जित करनी चाहिये" - यह प्रतिपादित करते हुए श्रीसमर्थजी ने किन सावधानियों का निर्देश किया है और कौन से मार्ग दिखाए हैं ?

प्रश्नपत्रिका - ४

(द.७-८ 'श्रवणनिरूपण',७-९ 'श्रवणनिरूपण', १७-३ 'श्रवणनिरूपण' पर आधारित)

प्र १) द.१७-३ की पहली ही ओवी में श्रीसमर्थजी ने, ग्रन्थ रखने से पूर्व किस तैय्यारी के निर्देश दिये हैं ?

प्र २) श्रवण के द्वारा क्या क्या लाभ होते हैं, दस लक्षण लिखिये।

प्र ३) द.७-९ की ३-४ ओवियों में श्रीसमर्थजी ने यह विचार किस तरह प्रतिपादित किया है कि ज्ञानी साधक के लिये अद्वैत ग्रन्थों का श्रवण ही उपयुक्त है।

प्र ४) अधोलिखित ओवी की ७-८ पंक्तियों में व्याख्या कीजिये।

"येकान्ती नाजुक कारबार।तेथें असावे अति तत्पर।त्याच्या कोटि गुणें विचार।अध्यात्म ग्रन्थीं॥"

प्र ५.१) आपने अब तक जिन के प्रवचन सुने हैं ऐसे पांच प्रभावी प्रवचनकारों के नाम बताइये।

प्र ५.२) उनके प्रवचनों में से कौन से विशिष्ट विचार आपके अन्तरतम के लिये प्रभावशाली साबित हुए ?

प्र ५.३) श्रीसमर्थजी द्वारा प्रतिपादित, उत्तम ग्रन्थ के लक्षण बताइये।

प्रश्नपत्रिका - ५

(द.१६-९ 'नाना उपासनानिरूपण', १६-१० 'गुणभूतनिरूपण', १७-५ 'अजपानिरूपण' पर आधारित**)**

प्र १) जगत् में नाना लोग नाना देवताओं की उपासना करते हैं, परन्तु वह उपासना एक अन्तरात्मा के प्रति ही पहुंचती है - यह तथ्य श्रीसमर्थजी ने कैसे प्रतिपादित किया है ?

प्र २) अन्तरात्मा (अथवा आत्माराम) रूपी जगदीश की महिमा का द. १६-१० में किस प्रकार वर्णन किया गया है ?

प्र ३) ' अजपानिरूपण' समास में श्रीसमर्थजी ने साधना करने की एक पद्धति सूचित की है, वह कौन सी है ?

प्र ४) निम्नलिखित ओवियों का सन्दर्भ सहित अर्थविवेचन कीजिये।

१. लक्ष्मीमध्यें करंटा नान्दे।त्याचें दरिद्र आधीक सान्दे।नवल केलें परमानन्दें।परमपुरुषें॥

२. न्याय आणी अन्याय। होये आणी न होये।विवेकेविण काये। उमजों जाणें॥

प्र ५.१) क्या आप प्रश्नपत्रिका प्राप्त करने के बाद १५ दिनों की अवधि में स्वाध्याय भेजने का संकल्प करते हैं ? क्या आप तदनुरूप अपने समय का नियोजन करते हैं ?

प्र ५.२) क्या आप का प्रबोध स्तर के अन्य अभ्यासार्थियों से परिचय है ? यदि है, तो क्या आप उन से प्रश्नपत्रिका के विषय में विचार विनिमय करते हैं ?

प्र ५.३) आपके ग्राम/शहर में 'दासबोध अध्ययन मंडल' विद्यमान है ? यदि है, तो वहां की कार्य व्यवस्था कैसी है ?

प्रश्नपत्रिका - ६

(द.५-७ 'बद्धलक्षण',५-८ 'मुमुक्षुलक्षण', ५-९ 'साधकलक्षण' पर आधारित)

प्र १) द. ५-७ में श्रीसमर्थजी ने मनुष्यों के कौन से चार वर्ग बताए हैं ?

प्र २) बद्ध से मुमुक्षु होने का परिवर्तन किन विविध कारणों से सम्भव होता है ? क्या इस विषय में आपका अपना कुछ निरीक्षण है ? 'मुमुक्षुलक्षण' समास में निहित ओवी संख्या ६, २० एवं ४१ का अर्थ विशद कीजिये।

प्र ३) द.५-७ 'बद्धलक्षण' समास की ओवीसंख्या ३५ से ४० में किन लक्षणों का वर्णन किया गया है ?

प्र ४) द.५-९ में साधकावस्था के अन्तर्गत प्राथमिक अवस्था किस प्रकार निरूपित की गई है ?

प्र ५) ऐसी पांच ओवियां लिखिये, जिन में किसी वीर पुरुष के रूप में साधक का वर्णन किया गया है। इस प्रकार का वर्णन कुल कितनी ओवियों में पाया गया है ?

प्रश्नपत्रिका - ७

(द.४-७ 'दास्यभक्ति',४-८ 'सख्यभक्ति',४-९ 'आत्मनिवेदनभक्ति' पर आधारित)

प्र १) 'दास्यभक्ति' एवं 'सख्यभक्ति' को परिभाषित करने वाली ओवियां लिखिये।

प्र २) "नाना रचना जीर्ण जर्जर। त्यांचे करावें जीर्णोद्धार।" इस ओवी के स्पष्टीकरणार्थ द.४-७ में क्या क्या विवरण दिया गया है ?

प्र ३) "सख्यभक्ति" से सम्बन्धित निम्नलिखित ओवियों का अर्थ विशद कीजिये।
(१) ४-८-४, (२) ४-८-१२, (३) ४-८-३०

प्र ४) जिन ओवियों में अधोलिखित कल्पनाएं समाहित हैं, वे ओवियां लिखिये।
१. ईश्वर से जो विभक्त न हो, वही भक्त है।
२. आत्मनिवेदन ही सर्वश्रेष्ठ भक्ति है।

प्र ५ अ) अध्यात्मशास्त्र में मुक्ति के चार प्रकार बताए गए हैं। इस सम्बन्ध में ओवी संख्या ४-९-२६ से ४-९-२९ तक किया जानकारी दी गई है ?

प्र ५ ब) नवविधा भक्ति क्या है ? उस में से कौन सी भक्तिविधा आप को सुलभ प्रतीत होती है ? क्या एक विधा से दूसरी विधा में प्रवेश किया जा सकता है ?

प्रश्नपत्रिका - ८

(द.१-९ 'परमार्थस्तवन',१३-७ 'प्रत्ययेविवरण',१९-७ 'येत्ननिरूपण' पर आधारित)

प्र १) अधोलिखित ओवियों के अर्थ लिखिये।

१. अनन्त जन्मीचें पुण्य जोडे।(१-९-२४)

२. कर्तयासी वोळखावें।(१३-७-२९)

३. अभ्यासें प्रगट व्हावें।(१९-७-१७)

प्र २) श्रीसमर्थजी ने द.१-९ में परमार्थ-महिमा का वर्णन किया है। उस में से कुछ चुनिंदा मुद्दों का १० पंक्तियों में निरूपण कीजिये।

प्र ३) निम्नलिखित ओवियों का कल्पना-विस्तार कीजिये।

१.'विचारें प्रकृति संव्हारें।दृश्य अस्तांच वोसरे।' (१३-७-१२)

२. 'अवघेच नष्ट ; येकला भला-। काशावरुनी।' (१९-७-१३)

प्र ४) अधोलिखित ओवियों में, जनप्रबोधन करने वाले महन्तों के लिये कौन से सूत्र बताए गए हैं ?

(अ) १९-७-६, (ब) १९-७-८, (क) १९-७-११

प्र ५ अ) इस मास के लिये चुने गए समासों में से किसी एक पर प्रायः १५ मिनट तक विवेचन करने को कहा गया, तो क्या आप कर सकते हैं ?

प्र ५ ब) इस के लिये आप कौन सा समास चुनना चाहेंगे ? उस में से पांच मुद्दों को १-१ वाक्य में लिखिये।

अथवा

प्र ५ ब) उपरिलिखित तीन समासों में आप को जो ओवियां सुभाषितसदृश प्रतीत होती हैं, ऐसी तीन ओवियां लिखिये।

प्रश्नपत्रिका - ९

(द.१२-४ 'विवेकवैराग्यनिरूपण',१२-५ 'आत्मनिवेदन',१३-१ 'आत्मानात्मविवेक' पर आधारित)

प्र १) निम्नलिखित अर्थसूचक ओवियां लिखिये।

१. विवेक के द्वारा अहंभावना और वैराग्य के द्वारा प्रपंचविषयक आसक्ति नष्ट होती है, इस प्रकार से जो बन्धनमुक्त होता है, वही निःसंग योगी।

२.वायु न होने पर जैसै 'केवल' आकाश बना रहता है, उसी प्रकार अष्ट देहों का निरसन होने पर सघन परब्रह्मतत्त्व बना रहता है, इस की अनुभूति लेनी होगी।

३. चींटी से लेकर ब्रह्मादि देवताओं तक सभी देहधारक हैं।

प्र २) अधोलिखित ओवियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये।

(१) तिहींप्रकारें आपण। नाहीं नाहीं दुजेपण॥ (१२-५-२१)

(२) येकेंविण येक काये।कामा नये वायां जाये॥ (१३-१-२२)

प्र ३) द. १२-४ को आधार बना कर निम्नलिखित कथन का विवेचन कीजिये -

"वैराग्य के अभाव में विवेक पंगु बनता है, तो विवेक का अभाव रहते वैराग्य दुराग्रही होता है।"

प्र ४) द. १३-१ की ओवीसंख्या ५ से २० के आधार से निरूपित कीजिये कि शरीर का संसर्ग पा कर आत्मा क्या क्या क्रियाएं करता है।

प्र ५) द. १२-४ में श्रीसमर्थजी का मानो अपना ही प्रतिबिम्ब लक्षित करने वाली दो ओवियां लिखिये।

प्रश्नपत्रिका - १०

(द.१-४ 'सद्‌गुरुस्तवन',१-५ 'सन्तस्तवन',८-९ 'सिद्‌धलक्षण' पर आधारित **)**

प्र १) अर्थविवेचन कीजिये।

(१) आदित्ये अन्धकार निवारे।(१-४-१०)

(२) जो बोलकेपणें विशेष। (१-५-११)

(३) सकळ धर्मांमध्ये धर्म। (८-९-५४)

प्र २) सद्‌गुरुस्तवन करते समय कौन कौन से उपमाएं दी हैं और फिर कैसे स्पष्ट किया है कि वे भी न्यून ही है ? द.१-४ में से ओवीसंख्या १५ से २५ को आधार बना कर उत्तर दीजिये।

प्र ३) द. १-५ में ओवीसंख्या ९ से १२ के माध्यम से यह कैसे विशद किया है कि आत्मवस्तु वाणी एवं बुद्‌धि की शक्तियों से परे है ?

प्र ४) सन्त महिमा निरूपित करने वाली चुनिंदा तीन ओवियां लिखिये।

प्र ५) आप के मत में, सिद्‌धावस्था में प्राप्त होने वाली निर्भयता, निःस्पृहता एवं निःसन्देहावस्था लोकमान्य तिलक के जीवनचरित्र के किस प्रसंग में विशेषरूप से उजागर हुई है ? संक्षेप में वह प्रसंग बताइये।

प्रश्नपत्रिका - ११

(द.१८-४ 'करंटपरीक्षानिरूपण',१९-३ 'करंटलक्षणनिरूपण',
१९-४ 'सदेव (भाग्यवान्)लक्षणनिरूपण' पर आधारित)

प्र १) निम्नलिखित अर्थसूचक ओवियां लिखिये।
१. सुव्यवस्थापन का लक्षण का आशय है समय का अपव्यय न करना।
२. असत्य अर्थात् पाप, सत्य का आशय है स्वरूप।
३. पाप के कारण दरिद्रता और दरिद्रता के कारण पाप का संचय होता है।
४. अनेकों की मनोभावनाओं का आदर करने पर ही भाग्यशालिता प्राप्त होती है।
प्र २) निम्नलिखित किन्हीं दो प्रश्नों पर अपने विचार लिखिये।
(१) आलस्य के कारण कैसी हानि होती है ?
(२) दुश्चित्त आलस्य की सुस्पष्ट प्रचीति कैसी होती है ?
(३) 'अवघेचि सुखी असावे। ऐसी वासना॥
प्र ३) सदेव (भाग्यशालिता) के दस लक्षण लिखिये।
प्र ४) श्रीसमर्थजी ने "पसेवरी वैरण घातले" इत्यादि ओवियों के द्वारा प्रत्यय का महत्त्व प्रतिपादित किया है। इस विषय पर संक्षिप्त स्पष्टीकरण लिखिये।
प्र ५) आध्यात्मिक ग्रन्थों के केवलमात्र पारायण (सावधि पाठ) उचित नहीं हैं, यह तथ्य श्रीसमर्थजी ने किस प्रकार विशद किया है ?

प्रश्नपत्रिका - १२

(द.२०-४'आत्मानिरूपण',२०-५ 'चत्वारजिनसनिरूपण',२०-८ 'देहक्षेत्रनिरूपण'
पर आधारित)

प्र १) अधोलिखित ओवियों का अर्थ विशद कीजिये।
१. प्रगट रामाचें निशाण।(२०-४-१४)
२. नर तोचि नारायण।(२०-५-२८)
३. आवाहन विसर्जन।हेंचि भजनाचें लक्षण।(२०-८-३०)
प्र २) द.२०-८ में श्रीसमर्थजी ने "मानवी शरीर यन्त्र" का किस प्रकार गौरवगान किया है ?
प्र ३ अ) द. २०-५ की प्रथम ओवी में विश्वरचना में निहित चार घटकों को कैसे स्पष्ट किया गया है ?
प्र३ ब) "सामर्थ्य आहे चळवळीचे" इस ओवी की कल्पना विस्तार करते हुए व्याख्या कीजिये।
प्र ४) द २०-४ की ओवीसंख्या ५ में माता की महिमा किस प्रकार प्रकट की गई है ?

प्र ५.१) "पृथ्वीमध्यें जितुकीं शरीरें। तितुकीं भगवन्ताची घरें। इस उक्ति की अनुभूति पाने पर क्या व्यक्ति के दैनन्दिन आचरण में बदलाव आ सकता है ?

प्र ५.२) क्या "प.दा.अ. उपक्रम 'समर्थ विचार' समझ पाने में आप के लिये सहायक सिद्ध हुआ ?

प्र ५.३) क्या आप किसी दासबोध अध्ययन वर्ग में सहभागी हुए हैं ? यदि हां, तो कब और किस स्थान पर ?

प्र ५.४) अपने इस प.दा.अ. उपक्रम और दासबोध ग्रन्थ के प्रचार प्रसार के लिये आप कैसे प्रयास कर सकते हैं ?

प्र ५.५) क्या आप के पास 'सार्थ दासबोध' है ? क्या आप 'सज्जनगड' मासिक पत्रिका के ग्राहक हैं ?

॥जय जय रघुवीर समर्थ॥